

पार्श्वनाथ के चरण-युगल में, क्यों बसता यह सर्प कहो।  
 बल अनन्त लखकर जिनवर का, चूर कर्म का दर्प अहो॥  
 क्षायिक दर्शन ज्ञान वीर्य से, शोभित हैं सन्मति भगवान।  
 भरत क्षेत्र के शासन नायक, अन्तिम तीर्थकर सुखखान॥  
 विश्व-सरोज प्रकाशक जिनवर, हो केवल-मार्तण्ड महान।  
 अर्घ्य समर्पित चरण-कमल में, वन्दन वर्धमान भगवान॥  
 ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतिजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालामहाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।  
 (सोरठा)

पंचम भाव स्वरूप, पंच बालयति को नमूँ।  
 पाऊँ शुद्ध स्वरूप निज, कारण परिणाममय॥  
 (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चरखा चलता नाँहि, चरखा हुआ पुराना।  
 पग-खूँटे दो हालन लागे, उर मदरा खखराना।  
 छींदी हुई पाँखड़ी पाँसू, फिरे नाँहि मनमाना॥  
 रसना तकली ने बल खाया, सो अब कैसे खूटे।  
 शब्द-सूत सूधा नहीं निकले, घड़ि-घड़ि पल-पल टूटे॥  
 आयु-माल का नाँहि भरोसा, अंग चलावे सारे।  
 रोज इलाज मरम्मत चाहे, वैद-बढ़ि ही हारे॥  
 नया चरखला रंगा चंगा, सबका चित्त चुरावै।  
 पलटा बरन गये गुल अगले, अब देखें नहिं भावै॥  
 मोटा महीं कातकर भाई! कर अपना सुरझेरा।  
 अन्त आग में ईंधन होगा, “भूधर” समझ सबेरा॥